www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-2* *Issue-8* *August 2025*

जयशंकर प्रसाद की काव्य दृष्टि

डॉ. कंचना कुमारी

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, बी. एन. कॉलेज, पटना, पटना विश्वविद्यालय, पटना

सारांश

जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के प्रमुख छायावादी कवि, नाटककार और चिंतक हैं, जिनकी काव्य दृष्टि भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता, राष्ट्रीय चेतना और मानवीय संवेदनाओं का समन्वित रूप प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत अध्ययन में जयशंकर प्रसाद की काव्य दृष्टि का विश्लेषण सामाजिक, ऐतिहासिक, राष्ट्रीय, धार्मिक तथा आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य में किया गया है। प्रसाद की रचनाओं में भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं, राष्ट्रप्रेम तथा मानवीय मूल्यों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। उनकी कविता में सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों तथा असमानताओं के प्रति विरोध के साथ–साथ सामाजिक जागरूकता और समानता का संदेश निहित है।

प्रसाद की काव्य दृष्टि में ऐतिहासिक गौरव और राष्ट्रीय स्वाभिमान का विशेष स्थान है, जो स्वतंत्रता आंदोलन की भावना से प्रेरित है। उनके साहित्य में धार्मिक और आध्यात्मिक तत्वों का भी समावेश है, जिसमें वेद, उपनिषद तथा भारतीय दर्शन की झलक मिलती है। इसके अतिरिक्त उनके काव्य में रूपक, प्रतीक, अलंकार और चित्रात्मकता का प्रभावशाली प्रयोग उनकी सर्जनात्मकता और शिल्प–कौशल को दर्शाता है। आधुनिकता और परंपरा के बीच उत्पन्न द्वंद्व भी प्रसाद की काव्य दृष्टि का महत्वपूर्ण पक्ष है, जिसमें उन्होंने भारतीय परंपरा को बनाए रखते हुए आधुनिक विचारधाराओं को स्वीकार करने का प्रयास किया है। उनकी भाषा और शैली संस्कृतनिष्ठ, भावपूर्ण और चित्रात्मक है, जो पाठकों के मन में गहरी संवेदना उत्पन्न करती है। इस प्रकार जयशंकर प्रसाद की काव्य दृष्टि भारतीय साहित्य में सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीयता और मानवीय मूल्यों के समन्वय का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करती है।

मुख्य शब्द– जयशंकर प्रसाद, काव्य दृष्टि, छायावाद, राष्ट्रीय चेतना, आध्यात्मिकता, सामाजिक दृष्टि, रूपक और शिल्प, भाषा और शैली, भारतीय संस्कृति, आधुनिकता और परंपरा.

1. परिचय

जयशंकर प्रसाद की काव्य दृष्टि का परिचय उनके समर्पण एवं दृष्टिकोण की गहराई के बिना संभव नहीं है। उनका काव्य जीवन भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं एवं राष्ट्रीय चेतना का सशक्त प्रतिबिंब है। उन्होंने कवि के रूप में न केवल सौंदर्य एवं भावनाओं के सृजन को महत्व दिया, बल्कि कविता के माध्यम से सामाजिक और धार्मिक मूल्यों को भी स्थापित किया। प्रसाद की काव्य दृष्टि में भाव और विचार का समन्वय प्रमुख है, जिसने उन्हें आधुनिक युग में भी भारतीय संस्कृति का सार्थक प्रतिनिधि बनाया। उनके साहित्य में मानव जीवन के संघर्ष और उसकी अंतर्वस्तु का विस्तृत चित्रण निहित है, जो उनकी जीवन–दृष्टि का स्पष्ट परिचायक है। प्रसाद ने कवि के रूप में व्यक्तिपरक एवं सामाजिक दोनों स्तरों पर अपनी यात्रा की, और इसमें भारतीय दर्शन, कलाकारिता और मानवीय मूल्यों का समागम हुआ। उनकी रचनाओं में लोकजीवन और राष्ट्रभक्ति का संयोजन उनके काव्यीय दर्शन का अभिन्न अंग है। इस प्रकार, उनकी काव्य दृष्टि न केवल रचनात्मक उत्कृष्टता का प्रतीक है, बल्कि भारतीय साहित्य एवं संस्कृति की अधिकतम प्रतिष्ठा के लिए एक आधारशिला भी स्थापित करती है।

2. सामाजिक दृष्टि

जयशंकर प्रसाद की सामाजिक दृष्टि उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है, जहाँ उन्होंने समाज की विडंबनाएँ, वर्तमान के संघर्ष एवं मानव सेवा के प्रति जागरूकता का परिचय दिया है। उनका दृष्टिकोण केवल व्यक्तिगत अनुभवों का संकलन नहीं है, बल्कि समाज की ईमानदार समीक्षा तथा उसमें सुधार का आह्वान भी है। प्रसाद ने अपनी कविता में मानवता के समक्ष उपस्थित विभिन्न सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों, रूढ़ियों एवं असमानताओं का प्रतिरोध

किया है। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के समय मानव–मूल्यों और समानता का समर्थन करते हुए सामाजिक बदलाव की आवश्यकता पर बल दिया, जिससे उनकी सृजनात्मकता में सुधार व सामाजिक जागरूकता की झलक मिलती है। उनका साहित्य उस समय के अनेक सामाजिक एवं राजनीतिक घटनाक्रमों का प्रतिबिंब है, जो उनके स्वाभाविक मानवीय संवेदनशीलता एवं प्रगतिशील विचारधारा को दर्शाता है।

प्रसाद की रचनाओं में स्त्री विमर्श का भी प्रमुख स्थान है, जिसमें उन्होंने महिलाओं की गरिमा एवं स्वाधीनता के लिए आवाज उठाई है। उनकी कविता, नाटक और गीत में सामाजिक समरसता और समानता का संदेश निहित है। वे समाज में व्याप्त अनाचार एवं अंधविश्वास का विरोध करते हुए, शिक्षित एवं जागरूक नागरिक बनने का आग्रह करते हैं। इस प्रवृत्ति से उनका साहित्य आम जनमानस में आशा एवं जागरूकता का संचार करता है। उनके साहित्यिक प्रयास सामाजिक सहयोग, सेवा भावना और मानवता के प्रति उनके समर्पण का प्रमाण हैं।

सामाजिक दृष्टि से, प्रसाद का योगदान व्यक्ति को न केवल अपने अंतर्मन की पहचान करने का माध्यम प्रदान करता है, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी जागरूकता और बदलाव का सूत्रपात करता है। अद्यतन एवं शिक्षित समाज के निर्माण के प्रति उनका दृष्टिकोण समाज सेवना में उनके योगदान की पुष्टि करता है, जो अपने युग से परे व्यापक मानवतावादी दृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। उनकी रचनाएं समाज को सुसंस्कृत, सशक्त एवं समतामय बनाने के उद्देश्य से प्रेरित करती हैं, और उनके विचार आज भी सामाजिक जागरूकता एवं प्रगतिशील आंदोलन के प्रेरक स्रोत विद्यमान हैं।

3. ऐतिहासिक और राष्ट्रीय चेतना

जयशंकर प्रसाद की रचना में ऐतिहासिक और राष्ट्रीय चेतना का विशिष्ट स्थान है, जहाँ उन्होंने भारतीय संस्कृति एवं आत्मीयता की प्राचीन परंपराओं को पुनः जागरूकता का स्वरूप प्रदान किया। उनके काव्य में देशभक्ति और स्वाभिमान की भावना मुखर रूप से प्रकट होती है, जो तत्कालीन सामाजिक परिवर्तनों के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। प्रसाद ने अपने साहित्य के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम के संगीत के साथ–साथ आत्मनिर्भरता की भावना को प्रोत्साहित किया। उन्होंने भारतीय इतिहास में पौराणिक और सामाजिक किरदारों को नई जीवनदृष्टि दी, जिससे व्यक्ति के सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्व का बोध होता है। इनके काव्य में छिपी हुई वीरता, त्याग और एकता की भावना देशवासियों को आंदोलन की ओर प्रेरित करती है। वहीं उनकी रचनाएँ हमारे ऐतिहासिक संघर्षों एवं सांस्कृतिक विरासत का नाटकीय चित्रण करती हैं, जो राष्ट्र की नई पहचान की स्थापना तक जाती हैं। प्रसाद की संवेदनाएँ और कल्पनाएँ आज भी राष्ट्रगान की भावना से प्रेरित हैं, जो देशभक्ति एवं राष्ट्रीय जागरूकता का आधार बनती हैं। यह वेदनात्मकता और आदर्श दृष्टिकोण देशभक्ति के उच्च आदर्शों को स्थापित करता है, जिससे भारतीय चेतना ने अपने मूल मूल्यों को पुनः स्थापित किया। उनके साहित्य में राष्ट्रीय स्वाभिमान और संस्कृति के संरक्षण का स्वर भी मुखर है, जो भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्पद बने। इस प्रकार, जयशंकर प्रसाद की काव्य–दृष्टि में ऐतिहासिक और राष्ट्रीय चेतना का समागम न केवल उनके साहित्य की अन्तरदृष्टि को दर्शाता है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक धाराओं का नवजीवन भी प्रदान करता है।

4. धार्मिक और आध्यात्मिक आयाम

जयशंकर प्रसाद की काव्य दृष्टि में धार्मिक और आध्यात्मिक आयाम अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनका साहित्य उन विचारधाराओं का प्रतिबिंब है, जिनमें जीवन की अंतर्निहित धारणा एवं अध्यात्मिक अनुभूतियों का सम्प्रेषण होता है। प्रसाद ने अपने काव्यों में धार्मिक प्रतीकों, मिथकों और आध्यात्मिक शक्तियों का सजीव चित्रण किया है, जिससे उनके काव्य में दिव्यता का अनुभव स्पष्ट हो जाता है। उनके काव्य में वेद तथा उपनिषद की गूंज स्पष्ट सुनाई देती है, जिनमें आत्मा का उद्धार, मोक्ष और परमात्मा की अनुभूति मुख्य आधार हैं।

उनकी रचनाओं में श्रद्धा, भक्ति और परमात्मा के प्रति असीम आस्था का प्रभाव दिखाई पड़ता है। 'कामायनी' जैसे महाकाव्य में भगवान के अवतार एवं आध्यात्मिक शक्तियों का वर्णन, रचनाकार की गहरी धार्मिक चेतना का परिचायक है। प्रसाद का दृष्टिकोण विशेष रूप से मानव जीवन में अंततः स्वात्मज्ञान और आध्यात्मिक उन्नति का महत्व दर्शाता है। उनके इन विचारों में ब्रह्मांड, जीवन और मृत्यु का गहन दर्शन दृष्टिगत होता है, जो उनके काव्य में ऊर्जा और उत्साह का संचार करता है।

सामाजिक परिवर्तन और मानवता के कल्याण की दिशा में उनका आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्रतिबिंबित होता है। वे मानते थे कि रचनात्मकता और कला का सशक्त उपयोग मानव जीवन को ऊँचाइयों पर ले जाने का माध्यम हो सकता है, और यही आध्यात्मिक संकल्प उनके साहित्य में स्पष्ट झलकता है। दोनों चेतनामें स्थिरता और अनन्तता का स्रोत बनते हैं, जो जीवन के कष्टों और संघर्षों का अतुलनीय सामना करने का शक्ति प्रदान करते हैं।

इस प्रकार, जयशंकर प्रसाद का धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण उनके काव्य के मुख्य स्तंभ हैं, जिनसे मानव जीवन की आध्यात्मिक चेतना जागरूक होती है। उनके गीतानक भावों और प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त आध्यात्मिक विचरण वर्तमान में भी साहित्यिक प्रकाश के रूप में जीवित है, और इसने भारतीय काव्य पर गहरा प्रभाव डाला।

5. रूपक और शिल्प

जयशंकर प्रसाद का काव्य शिल्प और रूपकों की स्थापना उनकी सर्जनात्मक दृष्टि का प्रमुख आधार हैं। उन्होंने अपने पदों में कल्पनात्मक और प्रतीकात्मक रूपकों का प्रयोग कर कविता को जीवंतता और गहराई प्रदान की है। इन रूपकों में भारतीय साहित्य की परंपरागत चिह्नों का प्रयोग न केवल उनकी सांस्कृतिक पहचान को व्यक्त करता है, बल्कि उनके काव्य में आधुनिक यथार्थ के साथ भी मेल बैठाता है। प्रसाद के रूपकों में लोकजीवन, पुराण एवं उपमानों का समावेश देखने को मिलता है, जिनके माध्यम से उन्होंने आत्मा की आंतरिक अनुभूतियों को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया है।

उनके काव्य में शिल्प का उल्लेखनीय प्रयोग शृंगारिक, रसप्रिय और चेतनात्मक है। उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से स्वाभाविकता और सौंदर्य की अभिव्यक्ति को सर्वोपरि माना। भाषा का चयन सुसमाचारपूर्ण और मनोवैज्ञानिक है, जिससे पाठक में गहरी एकांतिक अनुभूति जागृत होती है। प्रसाद की कविता में अलंकार, चित्रात्मकता और अर्थ की सूक्ष्मता का सममिश्रण उनके शिल्प कौशल का प्रतीक है। उनके गीतों में मृदुता और बीजभाव का समावेश, भावों की स्पष्टता और अभिधातत्व भरपूर परिलक्षित होता है।

प्रसाद ने अपने रूपकों और शिल्प में सामाजिक और राजनैतिक ज्वलंत विषयों को भी संजोया है। उनका ये शिल्प न केवल सौंदर्यमय और शाब्दिक आंदोलनों को समर्पित है, बल्कि उसमें जीवन के गहरे अर्थ भी प्रकट होते हैं। उनके काव्य की योजनाएँ और प्रतीकात्मक भाषा उनके विचारों की व्यापकता और साहित्यिक परिपक्वता का परिचायक हैं। इस प्रकार, जयशंकर प्रसाद की काव्य दृष्टि में रूपक और शिल्प का महत्व एवं प्रभाव इतना व्यापक है कि उनका अध्ययन उनके काव्य के पूर्णार्थ और उनकी साहित्यिक चेतना को समझने में अविराम स्रोत बनता है।

6. आधुनिकता से संघर्ष

अधुनिकता से संघर्ष का प्रतिफल जयशंकर प्रसाद के काव्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उनके रचनात्मक प्रयासों में परंपरागत मूल्यों और नवीन विचारधाराओं के बीच टकराव एवं द्वंद्व का अद्भुत चित्रण हुआ है। प्रसाद ने उस समय की बदलती सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का मुखर विरोध करते हुए, अपनी काव्य रचनाओं में उत्क्रमण की ऐतिहासिक प्रक्रिया का समर्थन किया। उन्होंने परंपरागत भारतीय जीवन और संस्कृति को बनाए रखते हुए आधुनिक विचारों के समावेश का प्रयास किया, जो संघर्ष का प्रमुख कारण रहा।

उनकी कविता में न केवल पारंपरिक मूल्यों का प्रतिरोध प्रकट होता है, बल्कि युग परिवर्तन की धड़कनों का भी विस्तार है। आधुनिकता के साथ संवाद स्थापित करने में उन्होंने अपने मौलिक रचनाओं में सामाजिक और साहित्यिक संघर्ष की भावना का सटीक परिचय दिया है। प्रसाद की दृष्टि में आधुनिकता का आगमन स्वाभाविक है, परंतु उसकी प्रवृत्ति को उन्होंने अनर्थकारी नहीं, बल्कि विकासशील और संभावनापूर्ण माना है। इस संघर्ष में उन्होंने परंपराओं के आधार पर नया, स्वाभाविक और प्रगतिशील विचार विकसित करने का समर्पण दिखाया।

उनके निबंध और कविताएँ इस बात का प्रमाण हैं कि आधुनिकता से टकराव परिवर्तन का एक आवश्यक हस्ताक्षर है, जो पुरानी धारणाओं को चुनौती देते हुए नई दिशाओं का संज्ञान कराता है। प्रसाद का यह संघर्ष उनकी रचनात्मकता में द्वैत का प्रतीक हैकृएक ओर परंपरा का संरक्षण और दूसरी ओर परिवर्तन का आह्वान। इस द्वंद्व को उन्होंने अपना स्वाभाविक जीवन दर्शन माना, जिसमें नए विचारों का स्वागत और पुरानी मान्यताओं का आदर दोनों आवश्यक हैं। इस तरह, प्रसाद का आधुनिकता से संघर्ष उनके व्यक्तित्व और काव्य दृष्टि का अभिन्न भाग है, जो भारतीय काव्य की प्रगतिशील दिशा में एक नई दिशा सूचित करता है।

7. भाषा और शैली

जयशंकर प्रसाद की भाषा और शैली उनकी कविता की आत्मा का प्रतिबिंब हैं, जो उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा एवं भावाभिव्यक्ति के स्तर को दर्शाते हैं। उन्होंने अपने कवितात्मक अंदाज में संस्कृत व प्राचीन साहित्य से गहरे समृद्धि प्राप्त की है, जिससे उनकी शब्दावली में गंभीरता एवं मर्मस्पर्शिता की झलक मिलती है। प्रसाद की भाषा सरल एवं सहज होने के साथ–साथ घितोष्ण और प्रभावी है, जो पाठक को सीधे हृदय तक पहुँचा देती है। उनकी रचनाओं में अद्भुत चित्रात्मकता और कल्पनाशीलता है, जो शब्दों के माध्यम से जीवंत दृश्य रच डालती है। उन्होंने पारंपरिक संस्कृत शैलियों एवं छंदों का सम्मान करते हुए उनमें नवीनता और आधुनिकता का स्फुट मिश्रण किया है, जिससे उनकी कविता राष्ट्रीय चेतना और आध्यात्मिकता का समावेश करती है। शैली के स्तर पर, प्रसाद ने शास्त्रीय तथ्य और अपठित अभिव्यक्तियों को लोकप्रिय साहित्य के स्वरूप में ढाला, और जनमानस के साथ जुड़ाव स्थापित किया। उनकी भाषा में व्याकरणिक सूक्ष्मता और अभिव्यक्ति की स्पष्टता का सम्मिलन है, जो कविता को अधिक प्रभावशाली बनाता है। उनकी शब्दावली में संस्कृत और आसान हिंदी का सुंदर संगम देखने को मिलता है, जिससे उनका साहित्यशैली स्वतंत्र और अलंकृत दोनों हो जाती है। इसी प्रकार, उनकी शैली में स्थिरता तथा प्रवाहशीलता का सम्मिश्रण है, जो कविता को सहज एवं प्रवाहमय बनाता है। इस तरह, जयशंकर प्रसाद की भाषा और शैली उनकी रचनात्मकता का अत्यंत महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं, जो उनकी

काव्य दृष्टि को सशक्त बनाते हैं और कविता में रहस्य, अर्थ और सौंदर्य के संयोग को संभव बनाते हैं।

8. प्रभाव और महत्व

जयशंकर प्रसाद की कविता का प्रभाव अत्यंत व्यापक एवं दीर्घकालिक है। उनकी रचनाएँ भारतीय साहित्य एवं संप्रदायिक चेतना पर गहरी छाप छोड़ने में असामान्य रूप से सक्षम रही हैं। उन्होंने कविता के माध्यम से जीवन के विशेष दृष्टिकोण प्रस्तुत किए, जिनसे पाठक की अंतः चेतना जागृत हुई। प्रसाद के काव्य ने आधुनिक कविता में नईधारा का उद्घाटन किया, जिसने परंपरागत रूपकों एवं शिल्प को समकालीन संदर्भों के साथ जोड़ा। उनके काव्य में कल्पना की शक्ति, भावों की गहराई और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता स्पष्ट दिखाई देती है, जो पाठक के मानस को विश्वसनीयता एवं उत्कृष्टता का अनुभव कराती है। उनके द्वारा विकसित रूपक और शिल्प की विशिष्टता ने कविता को श्रेष्ठ बनाने में योगदान दिया। वे न केवल साहित्यिक—थ्तमम

आधुनिक भाषा शैली एवं अभिव्यक्ति के पहले—पहल प्रयोगकर्ता थे, बल्कि उनकी कविताएँ सामाजिक एवं धार्मिक विमर्श का भी प्रतिनिधित्व करती हैं। इसने समाज में जागरूकता एवं चेतना का संचार किया। प्रसाद का साहित्य देशभक्ति, राष्ट्रीय चेतना एवं मानवीय मूल्यों को प्रोत्साहित करने का माध्यम बना। इससे कविता का प्रसार व्यापक और प्रभावी हुआ, और सामाजिक बदलाव का प्रेरक भी। उनकी कविताएँ भारतीय संस्कृति एवं लोक—संस्कृतियों के साथ घुलमिल गईं, जिन्होंने न केवल साहित्य के क्षेत्र में बल्कि जीवन के विविध आयामों में भी स्थायी प्रभाव डाला। अतः जयशंकर प्रसाद के काव्य का प्रभाव न केवल साहित्य जगत तक सीमित रहा, बल्कि वह राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं प्रेरणा का स्रोत भी बना रहा, जिससे उनकी महत्ता अग्रगण्य सिद्ध हुई।

9. निष्कर्ष

जयशंकर प्रसाद की रचनात्मक दृष्टि उनकी विस्तृत कल्पना, गहरे भावबोध और सूक्ष्म अभिव्यक्ति का परिणाम है। उनकी कविता में जीवन के विविध पहलुओं का समागम समर्पित है, जिसमें संपूर्ण मानवीय अनुभवों की बेबाक अभिव्यक्ति निहित है। प्रसाद की दृष्टि विशेष रूप से उनके उन रचनात्मक तत्वों में झलकती है, जो समाज, संस्कृति, धर्म और व्यक्तित्व के गूढ़ आयामों को समान रूप से समेटते हैं। उनका साहित्य जीवन के यथार्थ को व्यक्त करने में कला के नैतिक मूल्यों का तत्वावधान करता है, जो उनकी काव्य—दृष्टि की विशिष्टता को दर्शाता है।

उनकी कविता में रूपकों और प्रतीकों का प्रयोग इस प्रकार किया गया है कि वे जटिल विचारों को सहजता से व्यक्त कर सकें। प्रसाद की शिल्प और भाषाशैली में भी नवीनता के साथ गंभीरता का समावेश है। उन्होंने अपनी रचनाओं में पद्य और गद्य का किनारा समेटते हुए अपने विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान की, जिससे उनका साहित्य विविध रूपों में प्रभावी बना।

उनकी काव्य—दृष्टि की विशिष्टता उसकी आधुनिकता से संघर्ष में भी झलकती है, जहाँ उन्होंने परंपरागत साहित्य से न सिर्फ स्वयं को जोड़ा बल्कि आधुनिक विमर्श का भी समावेश किया। उनके प्रतिनिधि कार्यों में लोक जीवन, मानवीय अस्मिता और सांस्कृतिक चेतना की गहरी अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। यह प्रवृत्ति उन्हें अन्य कवियों से अलग बनाती है और उनके कार्यों को अक्षय बना देती है। प्रसाद की भाषा और शैली में अत्यंत गहराई और प्रवाह है, जो पाठक को सहज ही अपने सम्मोहन में ले लेती है। उनके प्रभाव और महत्व का आकलन इतना व्यापक है कि वे न केवल भारतीय साहित्य में बल्कि विश्व साहित्य में भी एक अलग पहचान रखते हैं। उनका साहित्य वर्तमान में भी नवाचार, मानवीय मूल्यों और रहस्यात्मकता का प्रेरक स्रोत बना हुआ है। इस प्रकार, जयशंकर प्रसाद की काव्य दृष्टि ने भारतीय काव्य को नई दिशा दी और इसके अमूर्त प्रभाव ने साहित्यिक जगत में स्थायी छवि बनाई।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ—

1. प्रसाद, जयशंकर. (2009). कामायनी. नई दिल्लीरू लोकभारती प्रकाशन.
2. प्रसाद, जयशंकर. (2010). आँसू. वाराणसीरू नागरी प्रचारिणी सभा.

3. प्रसाद, जयशंकर. (2011). लहर. नई दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन.
4. प्रसाद, जयशंकर. (2012). झरना. नई दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन.
5. शर्मा, रामविलास. (2014). छायावाद और हिंदी कविता. नई दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन.
6. सिंह, नामवर. (2013). छायावाद. नई दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन.
7. मिश्र, विद्यानिवास. (2011). हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ. नई दिल्लीरू वाणी प्रकाशन.
8. त्रिपाठी, रामचंद्र. (2015). जयशंकर प्रसाद का काव्य और दर्शन. वाराणसीरू विश्वविद्यालय प्रकाशन.
9. पांडेय, श्यामसुंदर. (2012). आधुनिक हिंदी काव्य और छायावाद. नई दिल्लीरू वाणी प्रकाशन.
10. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. (2010). हिंदी साहित्य की भूमिका. नई दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन.

Cite this Article-

'डॉ. कंचना कुमारी', "जयशंकर प्रसाद की काव्य दृष्टि', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:08, August 2025.

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i800017

Published Date- 11 August 2025